मेहनतकशों का पैग़ाम | *मेहनतकशों के नाम*

मज़दूर मोर्चा

पाक्षिक

Email : mazdoormorcha@yahoo.co.in
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

मोदी के तेज राज में ई एस आई मेडिकल कॉलेज की कछुआ गति	3
'श्रमेव जयते' पर प्रधानमंत्री जी को पाती मोदी जी! हम कम पढे जरूर हैं, पर गधे नहीं हैं!	5
राजनीति का अंधा युग विश्व हिन्दू आर्थिक फ़ोरम ने पेश की नवउदारवादी सुधारों की कार्यसूची	6
हर वर्ष 525 करोड़ बेवजह गंवाये जा रहे है गौ हत्यारों को पहचानो फ़ांसी हल नहीं	8

वर्ष 28 | अंक 2 | फरीदाबाद, सोमवार, 1-15 दिसम्बर 2014 | फोन : - 9999595632 | ₹ 2

हरियाणा बना बाबाओं का कुरुक्षेत्र

'स्वामी' रामदेव बनाम 'संत' राम रहीम

अध्यात्म के दो बड़े व्यापारियों-रामदेव और राम रहीम- में ठनी हुई है। मोदी, सरकार, भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अन्दरुनी सत्ता-राजनीति में रामदेव और राम रहीम मोहरे बने हुए हैं। हालांकि यह तथ्य भी नहीं नकारा जा सकता कि इन मोहरों में मुख्य खिलाड़ियों को मात देने की क्षमता भी है। आने वाला वक्त बतायेगा कि सत्ता राजनीति और धर्म के व्यापार का यह घाल-मेल क्या गुल खिलायेगा।

मजदूर मोर्चा, चंडीगढ़ ब्यूरो

रामदेव | राम रहीम

धर्म की राजनीति के मोहरे?

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की योग गुरु रामदेव से व्यक्तिगत वितृष्णा किसी से छिपी नहीं है। लोकसभा चुनाव से पूर्व रामदेव ने जो सीटों की सौदेबाज़ी के पैतरें दिखाये थे, उनसे मोदी के अभिमान को ठेस पहुंचना स्वाभाविक था। लिहाज़ा, अप्रत्याशित रूप से मिले पूर्ण बहुमत के चलते मोदी ने रामदेव को वापस उसके हरिद्वारा पातंजली आश्रम में बैठा दिया महीनों बाद रामदेव को दिल्ली आकर मोदी से मिलने का समय मिल सका।

हरियाणा से होने के चलते रामदेव को उम्मीद थी कि राज्य के विधानसभा चुनाव में भाजपा उसे स्टार प्रचारक के रूप में उतारेगी। पर मोदी के इशारे पर रामदेव को भाजपा की चुनावी रणनीति में शामिल ही नहीं किया गया। उल्टे, उसके 'आध्यातिमक' प्रतिद्वंद्वी सिरसा के राम रहीम को भाजपा ने अपने पक्ष में इस्तेमाल किया। राम रहीम के जगह-जगह अनुयायियों के समूह हैं, जिन्होंने भाजपा को वोट दिया। भाजपा को वोट तो रामदेव के अनुयायियों ने भी दिया होगा क्योंकि रामदेव में यह हिम्मत नहीं थी कि वह खुले रूप में भाजपा के विरोध में बोल पाता। उसने 'अच्छे दिन' की प्रतिक्षा करना ही उचित समझा।

जले पर नमक छिड़कने का काम तब हुआ जब मोदी के निर्देश पर हरियाणा के नवनिर्वाचित 35 भाजपा विधायकों ने चुनाव बाद राम रहीम के आश्रम में जाकर उसका धन्यवाद किया। इससे पहले मोदी ने स्वयं ट्वीट करके राम रहीम की इस बात के लिये प्रशंसा की थी कि वह मुंबई में मोदी के स्वच्छता अभियान को आगे बढ़ा रहा है। एक तरह से यह रामदेव को मुंह चिढाने जैसा ही था। लिहाज़ा रामदेव ने भी उत्तराखंड के कांग्रेसी मुख्यमंत्री हरिश रावत के कार्यक्रमों में जाकर अपने विद्रोही तेवरों का खुलासा करना शुरू कर दिया।

भाजपा की आज की रणनीति में राम रहीम का महत्व इसलिये भी है क्योंकि आगामी पंजाब विधानसभा चुनावों में पार्टी उसका इस्तेमाल अकालियो के विरुद्ध करना चाहती है। हरियाणा में जनहित कांग्रेस और महाराष्ट में शिव सेना से नाता तोड़कर चुनावी लाभ उठाने के बाद, भाजपा यही प्रयोग पंजाब में पुराने सहयोगी अकालियों के साथ भी करना चाहेगी। ऐसे में सिरसा से लगते पंजाब के इलाकों में उसे राम रहीम के अनुयायियों के वोटों की दरकार अवश्य रहेगी। ध्यान रहे कि इससे पहले राम रहीम पंजाब में अकाली और कांग्रेस के बीच अपना समर्थन बांटने का खेल खेलता आया है।

रामदेव और राम रहीम दोनों ही सैंकड़ों करोड़ के मुनाफ़े के आध्यातिमक व्यापार में संलिप्त हैं। दोनों के विरुद्ध अनेकों आपराधिक मामले दर्ज हैं। राम रहीम पर हत्या,बलात्कार और जालसाज़ी के मुकदमें काफ़ी अर्से से चल रहे हैं। इनसे छुटकारा पाने के लिये उसे राजनीतिक संरक्षण की सख्त जरूरत है। इसी तरह रामदेव पर भी उत्तराखंड में ज़मीन हड़पने और जालसाज़ी के बीसियों मुकदमे पिछले 2 वर्ष में दर्ज हुए हैं। उसके सिर पर भी गिरफ़्तारी की तलवार लटक रही है। उसे भी तगड़ा राजनीतिक संरक्षण चाहिये पर जहां राम रहीम ने अपने पत्ते ठीक खेल कर मोदी की कृपा पाली है, वहीं रामदेव ने अपनी अकड़ भरी महत्वाकांक्षा से मोदी को नाराज कर लिया है।

अब इस उठापटक में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भी रामदेव की तरफ़ से उतर आया है। वह मोदी को बेलगाम घोड़ा बनते नहीं देखना चाहता। संघ के लोग़ों ने रामदेव को तरजीह देनी तो शुरू की ही, उन्होंने अपने करीबी मन्त्रियों को रामदेव के पास भेजना और उनसे रामदेव की तारीफ़ें कराना भी जारी रखा है।

यहां तक कि संघ की कार्यकारिणी की बैठक भी रामदेव के पतंजली आश्रम में निश्चित की गयी। सवाल है कि क्या इस दिखावी मान-मनव्वल से रामदेव पर फ़र्क पड़ेगा?

रामदेव की राजनीति उसके व्यापारिक हितों और उसकी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा के गिर्द घूमती रही है। राम रहीम की राजनीति पैसे और प्रभाव की मोहताज रही है। हरियाणा जैसा भौगोलिक एवं जनसंख्या के लिहाज से छोटा सा राज्य इन दोनों बावाओं को एक साथ शायद ही निभा पाये। दरअसल, उनका कुरूक्षेत्र सिर्फ़ उनका ही रणक्षेत्र नहीं रहा। यह मोदी और संघ के अन्दरूनी तनाव का क्षेत्र भी बन रहा है।

ख़बर दार

किस मुंह से कहोगे वाड्रा को चोर

जन का धन, अदानी का फ़न, मोदी का जतन

रॉबर्ट वाड्रा | गौतम अदानी

चोर-चोर मौसेरे भाई एक सोनिया का - एक मोदी का

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने छोटे से समय में दो करोड़ से भी ज़्यादा बैंक खाते खुलवाने का श्रेय भारत में ही नहीं ऑस्ट्रेलिया में भी लेना नहीं छोड़ा। वहां प्रवासी भारतीयों को सम्बोधित करते हुए मोदी ने बड़े गर्व से बताया कि इन खातों में 5000 करोड़ से अधिक की रकम जमा हो चुकी है। बस वे यह ज़िक्र करना भूल गये कि उनके दोस्त गौतम अदानी को उसी समय छः हजाार करोड़ रु. भारतीय स्टेट बैंक से कर्ज के नाम पर दिये जा रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया के दौरे पर अदानी भी मोदी के सरकारी शिष्टमंडल का सदस्य था। एक और सदस्य थी एस बी आई की चेयरपर्सन। ऑस्ट्रेलिया की कोयला खदानों का ठेका अदानी को दिलाना इसी दौरे में पक्का किया गया। साथ ही एस बी आई की चेयरपर्सन और अदानी के बीच उपरोक्त कर्ज के करार पर भी दस्तखत किये गये। यह सब आनन-फ़ानन में इसलिये सम्पन्न हो सका क्योंकि स्वयं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी मध्यस्थता (दलाली?) कर रहे थे।

बहुत से जानकारों का मानना है कि मोदी की राजनीति जिस पैसे के दम पर चलती आई है, वह अदानी के व्यापार की आड़ में ही संचित है। जिस तेज़ी से और बिना कोई छानबीन किये कर्ज का यह करार सम्पन्न हुआ है, उससे मोदी और अदानी की घनिष्ठता में सन्देह की गुंजायश नहीं रह जाती।

अदानी को कर्ज देने के इस प्रकरण की और भी कई रहस्यमई पर्ते हैं। एक ओर मोदी 'मेक इन इन्डिया' का नारा देते हुए भारत में विदेशी पूंजी के निवेश का आह्वान कर रहे हैं और दूसरी ओर उनके चहेते उद्योगपतियों की मार्फ़त भारत का पैसा विदेशों में लगाया जा रहा है। इस सिलसिले में हद की इन्तहा तो यह है कि ग़रीबों से 5000 करोड़ 'जन-धन' के नाम पर वसूले गये और 6000 करोड़ एक ही उद्योगपति के हवाले कर दिये गये।

और भी सीनाज़ोर पहलू यह है कि इसी अदानी पर एस बी आई का ही 4800 करोड़ का कर्ज़ा पहले से ही खड़ा है। अब इस मौजूदा कर्ज में व्यवस्था की गयी है कि अदानी का पहले का कर्जा चुकता मान लिया जायेगा। एस बी आई उसे 1200 करोड़ रु. की धनराशी देगा और माना जायेगा कि वह 6000 करोड़ का कर्जदार है। यानी बैंक के ही पैसे से बैंक का ही कर्ज चुकता किया जा रहा है। बैंकिंग शब्दावली में इसे कर्जे का 'पुनर्गठन' कहते हैं। दरअसल होती यह सरारसर लूट है, क्योंकि पुनर्गठन की यह प्रक्रिया कभी समाप्त नहीं होती। जब 6000 करोड़ चुकता करने का वक्त आयेगा तो एक उससे भी बड़ा कर्ज देकर उसे भी चुकता मान लिया जायेगा।

अगर किसान के दस-बीस हज़ार भी बकाया हों तो बैंक का कारिंदा उसे गालियों से बेइज्जत कर हवालात में बन्द करा देता है, जिसकी कोई जमात भी नहीं होती। अगर एक मध्यमवर्गीय नागरिक 10-20 लाख का कर्ज लेकर किश्त चुकाने में देरी कर दे तो उस पर नोटिसों के अम्बार लग जाते हैं और बैंक द्वारा कुड़की की कार्यवाही भी शुरू हो जाती है। पर अदानियों को हज़ारों करोड़ चुकता न करने पर पहले से भी बड़ा कर्ज देकर 'पुनर्गठन' की प्रक्रिया अमल में लाई जाती है।

इस सरासर अदानी लूट के सामने राबर्ट वाड्रा की डी एल एफ लूट तो कुछ भी नहीं लगती। वाड्रा ने डी एल एफ के पैसे से डी एल एफ की ज़मीन खरीद कर मुख्यमंत्री हुड्डा के सहयोग से 200 करोड़ कमाये थे। अदानी ने एस बी आई के पैसे से प्रधानमंत्री मोदी के सहयोग से हज़ारों करोड़ डकारने का जुगाड़ कर लिया है। दोनों में कौन सी लूट बड़ी हुई?

रामविलास की नकेल खेमका?

मुख्यमंत्री मनोहरलाल खट्टर की मज़बूरी रही होगी रामविलास शर्मा को नम्बर दो ओहदे का कैबिनेट मन्त्री बनाना। शर्मा की भाजपा में वरीयता को देखते हुए उन्हें परिवहन जैसा मलाईदार महकमा भी देना पड़ा। अब अड़ियल एवं ईमानदार नौकरशाह अशोक खेमका को परिवहन सचिव एवं आयुक्त बना कर खट्टर ने शर्मा पर नकेल कसने की पैंतरेबाज़ी भी दिखाई है।

सवाल यह है कि इस प्रकार प्रशासन कैसे चलेगा? चोर को चोरी करने की खुली छूट दे दी जाय और उसके पीछे जासूस छोड़ दिये जायें। अगर रामविलास की 'ख्याति' ऐसी गयी गुजरी है कि पीछे खेमका लगाना पड़े तो खट्टर की किस्मत से शायद ही किसी को ईर्ष्या हो। एक तरह से यह धमकी प्रशासनिक अनुभवहीनता का ही नमूना कहा जायेगा। जिस मंत्रालय/विभाग में मंत्री और सचिव परस्पर विरोधी दिशा में चलेंगे, वहां खामियाज़ा भुगतना तो जनता को ही पड़ेगा।

खट्टर को समझना चाहिये कि शासन एवं प्रशासन में भ्रष्टाचार रोकने के लिये त्वरित कारगर एवं पारदर्शी सिस्टम बनाने पड़ते हैं। इस दिशा में उनकी सरकार की पहल नदारद है। लिहाज़ा, रोज कुंआं खोदो और आग बुझाओं जैसी स्थिति निरन्तर बनी रहने जा रही है। रामबिलास तो कोई अकेला है नहीं। प्रथम बार विधायक बनें और मंत्री बना दिये गये एक 'ठेकेदार' ने शुरूआतीी दस्तखत करने के एवज में एक करोड़ वसूलने में ज़रा भी संकोच नहीं दिखाया। इतने खेमका कहां से लाओगे खट्टर जी!